अमर नौजवान

ऐ अमर नौजवानो तुमको मेरा सलाम ।
सरहद के पासबानो तुमको मेरा सलाम ।
तुम आन हिन्द की हो, तुम शान हिन्द की हो ।
तुम जान हिन्द की हो, तुमको मेरा सलाम ।।

चौडा तुम्हारा सीना, ऊँचा तुम्हारा माथा ।
फौलादी दोनों बाहें शत्रु की रोके राहें ।
बलिदान के पुजारी तुमको मेरा सलाम ।
सरहद के पासबानों तुमको मेरा सलाम ।।

सीमा रहे सुरक्षित बस इतना ध्यान रखना ।
तुमको कसम है अपने भारत की लाज रखना ।
तुम ढाल हिन्द की हो तुमको मेरा सलाम ।
सरहद के पासबानों तुमको मेरा सलाम ।।

सेवा तुम्हारी भारी उपकार है ये हमपर ।
आजाद हिन्दवासी करते हैं, गर्व तुमपर ।
तुम मान हिन्द का हो, तुमको मेरा सलाम ।
सरहद के पासबानो तुमको मेरा सलाम ।।

अपनों से दूर हो पर दिल के करीब हो तुम ।
बच्चे हो या कि बूढे सब के अज़ीज़ हो तुम ।
हम साथ हैं तुम्हारे तुमको मेरा सलाम ।
सरहद के पासबानो तुमको मेरा सलाम ।।

दुनियाँ है आनि–जानी सब कुछ यहाँ है फानी ।
पर तुम अमर रहोगे तुम न कभी मिटोगे ।
ऐ अमर नौजवानों तुमको मेरा सलाम ।
सरहद के पासबानो तुमको मेरा सलाम ।।

K.ZAREENA KHATOON,
M.A.,M.Phil.,
Lecturer in Hindi,
Osmania College (Women),
Kurnool, A.P.

राष्ट्र भाषा हिन्दी

हिन्द के निवासी हिन्दी,
हिन्दियों की भाषा हिन्दी।
मीठी, मधुर, सरल, सरस,
जन-जन की भाषा है हिन्दी।
बैर मिटाती प्रेम बढाती,
एकता की धारा हिन्दी।
तेलुगु, तमिल कन्नड भाषी,
संस्कृत माँ तो दीदी हिन्दी।
गले लगो तो समझ सकोगे,
माँ जैसी होती है दीदी।
हिन्द के निवासी हिन्दी,
हिन्दियों की भाषा हिन्दी।

K.ZAREENA KHATOON,
M.A., M.Phil.,
Lecturer in Hindi,
Osmania College (Women),
Kurnool, A.P.

प्रेमचन्द

प्रेमचन्द तू प्रेम का अहवान है,
कृषकों का मान व सम्मान है ।
धूप अन्धेरों में थे जिनके झोंपड़े,
खेत भी थे धूप में जलते खडे ।
शोषकों की मार से थे काँपते,
आँसुओं से भीगादामन थामते ।
नारी अबला घर की दीवारों में बंद,
योग्यताएँ सारी करदी थी ओ मंद।
ऐसे में सूरज तू अपने साथ लाया,
सोये भारत वासियों को था जगाया ।
ज्ञान का, कर्तव्य का अधिकार का,
दीप नगरों से था गाावों तक जलाया ।
तेरी वाणी से उठा तूफान है,
प्रेमचन्द तू प्रेम का अहवान है ।
दाने-दाने के जब फाके पड गये,
'कफन' को भी बेचकर थे खागये ।
माँगने पर भी न मिलता दान था,
और होरी ने किया 'गोदान' था ।
'कर्म भूमि' कर्म का सन्देश है,
प्रेम की असफलता 'वरदान' है ।
क्यों बनी वैश्या सुमन 'सेवासदन' की,
है लडाई 'प्रतिज्ञा' विधवा विवाह की ।
'निर्मला', 'प्रेमाश्रम' या हो 'गबन',
सबमें रोता और लंगडता है वतन ।
लेखनी तेरी महावरदान है,
प्रेमचन्द तू प्रेम का अहवान है ।

श्रीमति के.जरीना खातून
प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग
उस्मानिया कालिज फर उमन,
कर्नूल, आन्ध्र प्रदेश